www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2022**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages.

© UCLES 2022

www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2022 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * छात्रो, ध्यान से सुनें। संग्रहालय के द्वार खुलने वाले हैं। सुरक्षा जाँच पार करने के बाद सबसे पहले अपनी पीने के पानी की बोतलें भर लें। संग्रहालय की सैर करने के लिए आपके पास कुल आठ घंटे का समय है। सैर के बाद आपको संग्रहालय में प्रदर्शित किसी वस्तु या प्रदर्शनी पर एक लेख लिखना है। इसलिए नोट करते रहें। अपना सामान संभाल कर रखें और संग्रहालय में प्रदर्शित चीज़ों को छूकर देखने की कोशिश न करें। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिलाः आइए जनाब। एकदम नई क़िस्म के जूते आए हैं।

पुरुषः नहीं, मुझे अपनी बेटी के लिए चाहिए।

महिलाः कोई बात नहीं, कहाँ है बिटिया?

पुरुषः वह तो नहीं आई। लेकिन मेरे पास उसका नाप है।

महिलाः ठीक है। इधर आ जाइए और पसंद कर लीजिए।

पुरुषः ऐसे दिखाइए जिनमें चलते समय रोशनी हो और संगीत बजे।

महिला: ऐसा दिखा दूँ जिसमें बच्ची के दूर जाते ही अलार्म बजता हो!

पुरुष: अरे वाह! ज़रा दिखाइए! **

[Pause 10 seconds]

www.xtrapapers.com

MALE: **संवाद 3**

FEMALE: * हैलो राजी, मैं तनु बोल रही हूँ। हम लोग आज कुटीर उद्योगों की जानकारी जुटाने चाँपा नाम के एक गाँव में गए हैं। वापस लौटते-लौटते शाम हो जाएगी। इसलिए स्कूल आना नहीं हो पाएगा। मुझे तुमसे एक मदद चाहिए। अगले हफ़्ते की समय सारणी बोर्ड पर लग गई होगी। प्लीज़ उसका एक फ़ोटो लेकर मुझे वट्सएप पर भेज दो। मुझे यह भी जानना है कि अपने सालाना अधिवेशन की बैठक में क्या तय हुआ है। हम लोग इस बार किस को मुख्य अतिथि बना कर बुलाने वाले हैं। तुम फ़ुरसत मिलते ही मुझे फ़ोन करना। बाय। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 4**

MALE: * पुरुषः बेटी, आप बैठ जाइए। आपके पास सामान है।

महिलाः नहीं दादा जी, यह तो आपकी ही सीट है। शुक्रिया।

पुरुषः नहीं, मुझे तो बस तीन-चार स्टॉप के बाद उतर जाना है।

महिलाः तो ठीक है। तब तक तो आराम से बैठे रहिए!

पुरुषः चलो तुम्हारी मर्ज़ी। चाहो तो अपना सामान रख दो।

महिलाः लेकिन आपको तकलीफ़ तो नहीं होगी? भारी है!

पुरुषः बिल्कुल नहीं। अभ्यास हो गया है, बच्चों को बिठाकर।

महिलाः शुक्रिया। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 5**

FEMALE: * भारत के महान फ़ुटबॉल खिलाड़ी चुन्नी गोस्वामी का गुरुवार को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे। गोस्वामी सन 1962 के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान थे और बंगाल के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट भी खेलते थे। बहुमुखी खेल प्रतिभा के धनी गोस्वामी भारत के लिए ओलंपिक खेलों समेत 50 फ़ुटबॉल मैचों में खेले थे। साथ ही उन्होंने प्रथम श्रेणी के 46 क्रिकेट मैचों में बंगाल का प्रतिनिधित्व भी किया था। **

[Pause 10 seconds]

© UCLES 2022

www.xtrapapers.com

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: * महिलाः बख़्शी साहब, मोहल्ले की सफ़ाई का कुछ करना होगा।

पुरुषः क्यों, क्या हुआ? सफ़ाई वाले आते तो हैं!

महिलाः नहीं, बात उनकी नहीं है। कुत्ते पालने वालों ने नाक में दम कर रखा है।

पुरुषः हाँ, यह तो है। लोगों को पालने का शौक़ तो लग गया है, लेकिन उनका मैला साफ़ नहीं करते।

महिलाः भला कोई बात है! कितना देख-देख कर चलना पड़ता है!

पुरुषः चलिए ठीक है। इस बार की बैठक में बात उठाते हैं।

महिला: पक्का! मैं कुछ और लोगों से भी कहती हूँ। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

MALE: **गाँधी जी के कला बोध का परिचय देने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।**

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * कहा जाता है कि महात्मा गाँधी को कला विशेष रूप से आकर्षित नहीं करती थी पर वे प्राकृतिक सुंदरता की प्रशंसा किया करते थे। उनके लिए विश्वप्रसिद्ध ताजमहल निरीह मज़दूरों से जबरन करवाया गया काम ही था। पेरिस के प्रसिद्ध आइफ़िल टावर को वे बच्चों का खिलौना मानते थे। उन्होंने अपनी तरह से जीने की कला आविष्कृत की थी, जिसने उनके पूरे जीवन को कलात्मक बना दिया।

अक्तूबर 1924 में उन्होंने कहा था, "मुझे तो सुंदरता सत्य में दिखाई देती है। जिस कला से हम सत्य के भीतर छिपी सुंदरता देख सकें, वही सच्ची कला होगी। मेरे जीवन में सच्ची कला काफ़ी मात्रा में है, भले ही आप जिसे कलाकृति कहते हैं, उसे वैसा न पाएँ। जो सुंदर दृश्य मुझे दिखाई देते हैं, जैसे कि रात के आसमान में मैं चमकते सितारे देखता हूँ, क्या मानव-निर्मित कला वैसा दे सकती है?"

लेकिन इसका यह अभिप्राय निकालना भी ग़लत होगा कि गाँधी जी में सौंदर्य-बोध की कमी थी। यदि ऐसा होता तो वे सन 1937 के कांग्रेस राष्ट्रीय अधिवेशन के पंडाल की सजावट के लिए शांति निकेतन से प्रसिद्ध कलाकार आचार्य नंदलाल बसु को क्यों बुलाते? पर हाँ, आधुनिक कला, ख़ासकर अमूर्त कला के बारे में उनका कहना था, "इसकी क्यों ज़रूरत हो कि चित्रकार खुद अपनी पेंटिंग मुझे समझाए? पेंटिंग ही स्वयं अपनी बात मुझ तक क्यों नहीं पहुँचा सके?"

महात्मा गाँधी की कला के विषय में कुछ भी राय रही हो पर कलाकारों को उन्होंने सदा प्रेरित और प्रभावित किया। लोककला से लेकर डाक टिकटों, सिक्कों, नोटों तक पर उनकी तस्वीरें छापी गईं।

www.xtrapapers.com

भारत ही नहीं बल्कि कज़ाखिस्तान, मोरोक्को, लाइबेरिया, गयाना, कैमरून और दक्षिण अफ़्रीका जैसे देशों के टिकटों पर भी गाँधी जी के चित्र छापे गए। दुनिया में शायद ही दूसरा कोई ऐसा नेता हो जिसको दुनिया के इतने सारे देशों में इतने सारे कलाकारों ने इतनी सारी विधाओं में ढाला हो।

भारत में तो उनके जीवन से जुड़े प्रायः प्रत्येक स्थल पर गाँधी-स्मृति संग्रहालय स्थापित हो चुके हैं, जिनमें पर्यटकों के लिए तरह-तरह के चिन्ह बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। जैसे उनके तीन बंदर, मूर्तियाँ, उनके तीन बंदर, मूर्तियाँ, दांडी-यात्रा, नोआखाली में पालकी पर बैठे गाँधी जी, ये सब चित्रों, मूर्तियों, यहाँ तक कि कठपुतलियों के रूप में भी मिल जाएँगे। लोक-कला की विभिन्न विधाओं में भी गाँधी जी मौजूद हैं जैसे मधुबनी, वारली, रंगोली, चमड़े का काम, तंजौर के काँच के चित्र आदि। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8–15**

MALE: **जापान में पढ़ाने वाले भारतीय प्राध्यापक सुगत मित्र के साथ पत्रकार विभा माथुर की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: विभाः * प्रोफ़ेसर सुगत मित्र, आप एक अरसे से जापान में पढ़ा रहे हैं और एक गाँव में रहते हैं। वहाँ के देहात की तस्वीरें देखकर ऐसा लगता है जैसे तकनीक में ही नहीं प्रकृति के रखरखाव में भी जापान दुनिया से कहीं आगे है। क्या मेरा अनुमान सही है?

सुगतः है भी और नहीं भी। सही इस मायने में कि जापानी लोग पर्यावरण के साथ-साथ अपनी साफ़-सफ़ाई का भी बहुत ध्यान रखते हैं। गलियों को साफ़-सुथरा रखते हैं। घरों में जूते उतार कर जाते हैं। उन्होंने रिड्यूस, रीयूज़ और रिसाइकल की कला में महारत हासिल कर रखी है। यानी ऐसी चीज़ों का प्रयोग कम करना जिनसे कचरा फैले, चीज़ों का दोबारा इस्तेमाल करना और कचरे को रिसाइकल करना। इन तीनों में एक कला और जुड़ जाती है जो जापानियों में पुराने ज़माने से रही है। वह है रिस्पेक्ट या चीज़ों का आदर करने या उनसे लगाव रखने की कला जिसे वे 'मोत्ताइनाइ' कहते हैं।

विभाः चलिए ये तो मेरा अनुमान सही होने की बातें हुईं, और वे कौन सी बातें हैं जो उसे ग़लत ठहराती हैं?

सुगतः आपको सुनकर शायद अचरज होगा लेकिन प्लास्टिक का कचरा पैदा करने में जापान दुनिया में दूसरे स्थान पर है। पूरा यूरोपीय संघ इतना प्लास्टिक का कचरा पैदा नहीं करता जितना अकेला जापान कर देता है। जबकि यूरोपीय संघ की आबादी जापान से चार गुना है। आप तो जानती ही हैं कि महासागरों और नदी-जलाशयों में बढ़ते प्लास्टिक के प्रदूषण को लेकर आजकल कितनी चिंता फैली हुई है।

www.xtrapapers.com

विभाः	और वह चिंता सही भी है क्योंकि यह प्लास्टिक जलजीवों और पेड़-पौधों में जाकर जीन-परिवर्तन कर रहा है जिसके प्रभाव हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। लेकिन आप ही बताइए कि जापान में ऐसा विरोधाभास क्यों है? एक तरफ़ सफ़ाई और कचरे को लेकर इतनी जागरूकता और दूसरी तरफ़ प्लास्टिक का इतना कचरा?

सुगतः	मुझे लगता है इसका कारण जापान के औद्योगिक विकास की दिशा में छिपा है। जापान ने शुरू से ही छोटी, हल्की और टिकाऊ चीज़ें बना कर दुनिया में अपनी धाक जमाई जिनमें प्लास्टिक का ख़ूब प्रयोग होता है। धातुएँ मँहगी और भारी थीं और काग़ज़ का प्रयोग वे किफ़ायत से करते हैं क्योंकि वह पेड़ों से बनता है। इसलिए प्लास्टिक ही बचा जिसका प्रयोग बढ़ता गया।

विभाः	तो अब प्लास्टिक का कचरा कम करने के लिए क्या किया जा रहा है?

सुगतः	प्लास्टिक के कचरे की समस्या पर अंकुश लगाने के लिए पुरानी मोत्ताइनाइ परंपरा का सहारा लिया जा रहा है जो लोगों को पुरानी चीज़ों को सहेज कर रखने, जहाँ तक हो सके उनका दोबारा इस्तेमाल करने और रिसाइकल करने के लिए प्रेरित करती है। पुरानी पीढ़ी के लोग तो मोत्ताइनाइ को समझते हैं लेकिन नई पीढ़ी के युवाओं को जानकारी नहीं है। केन्या की नोबेल पुरस्कार विजेता वंगारी मथाई कुछ साल पहले जापान आई थीं। पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्हें मोत्ताइनाइ की परंपरा इतनी भाई कि उन्होंने उसे पुनर्जीवित करने का अभियान चला दिया।

विभाः	यह अभियान प्लास्टिक के कचरे को कम करने के लिए क्या करता है?

सुगतः	यह नई पीढ़ी को 'इस्तेमाल किया और फेंका' की संस्कृति से दूर हटा कर चीज़ों के प्रति लगाव की भावना को जगाता है। चाय समारोहों का आयोजन करता है जहाँ करीने से मरम्मत किए हुए चाय के पुराने प्यालों की नुमाइश की जाती है। पुरानी चीज़ों को अलविदा कहने के समारोह होते हैं जहाँ टूटी हुई सिलाई की सूइयों को टोफ़ू के पकोड़ों में लगा कर विदा किया जाता है। बच्चों को पुरानी चीज़ों की तरफ़ लुभाने के लिए मोत्ताइनाइ बाज़ार लगते हैं जहाँ बच्चे अपनी पुरानी चीज़ों के बदले दूसरी चीज़ें ख़रीद सकते हैं। इससे बच्चे चीज़ों को फेंकने की बजाय उन्हें दोबारा काम में लाना सीखते हैं। एक पूरे शहर को ही मोत्ताइनाइ शहर बना दिया गया है जहाँ अब कोई कचरा नहीं फेंका जाता।

विभाः	प्रोफ़ेसर सुगत मित्र, हमारे लिए समय निकालने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

सुगतः	आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: **स्कूलों की पढ़ाई और बच्चों की रचनाशीलता पर दो शिक्षाशास्त्रियों की बहस को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।**

यह बहस आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * जो बच्चे इस साल से पढ़ाई शुरू करेंगे वे 2090 में जाकर सेवानिवृत्त होंगे। कोई नहीं बता सकता कि उन दिनों की दुनिया कैसी होगी। यानी स्कूलों का काम बच्चों को उस दुनिया के लिए तैयार करना है जिसका स्वरूप कैसा होगा इसका अंदाज़ा किसी को नहीं है। लेकिन हमनें शिक्षा प्रणाली ऐसी बना रखी है जो समस्याओं के नए-नए हल खोज निकालने की बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को दबा कर उन्हें आज्ञाकारी मशीनों में बदलने का काम करती है। सारा ज़ोर कुछ नया और अनूठा कर दिखाने की बजाय सूचनाएँ भरने पर रहता है। रचनाशीलता को साक्षरता की बलि चढ़ाया जा रहा है। भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम कहा करते थे, "ग़लती करना सीखने की पहली सीढ़ी है। भूल आपका सबसे बड़ा गुरु है। भूल से अनुभव होता है और अनुभव होने पर आप कम भूल करते हैं।" लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली बच्चों को भूल से सीखना नहीं बल्कि भूल से बचना सिखाती है। पढ़ने-लिखने से लेकर बोलने-बनाने तक हर काम में भूल न करने पर ज़ोर रहता है। हम बच्चों को अपनी रचनात्मक प्रकृति दबाना सिखाते हैं। परीक्षाएँ हों, प्रतियोगिताएँ हो या नौकरी के लिए साक्षात्कार, योग्यता का आकलन भी उसी आधार पर होता है कि एक नियत समय और अवसर पर कौन कम ग़लतियाँ करता है।

MALE: ऐसा नहीं है। थोड़े बहुत सुधारों के साथ शिक्षा की यही प्रणाली गुरुकुलों के ज़माने से चली आ रही है। बच्चे स्कूल में कोरे कागज़ की तरह आते हैं। स्कूल उन्हें सिखा-पढ़ा कर शिक्षित, अनुशासित और विचारशील इंसान बना कर भेजते हैं जो समाज में सकारात्मक और सार्थक भूमिका निभा सके। स्कूलों में बच्चों की रचनाशीलता को दबाया नहीं जाता वरन उसे सही दिशा दी जाती है ताकि उससे बच्चा और उसका समाज दोनों लाभान्वित हो सकें। जो बच्चे स्कूल नहीं जाते उन्हें दूसरों के साथ मिल-जुल कर काम करने और अपनी सहज प्रतिभा और कमज़ोरियों को समझने में कठिनाई होती है। अनुशासन और सामाजिक व्यवस्था के बिना कोरी रचनाशीलता व्यक्ति को दिशाहीनता की तरफ़ भी धकेल सकती है। यदि रचनाशीलता पर कम और सूचनाओं के संग्रह पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है, तो इसमें कमी हमारी शिक्षा प्रणाली की नहीं बल्कि अध्यापकों और सरकारों की है जो उसमें रचनाशीलता और सामान्य ज्ञान का सही संतुलन नहीं रख रहे।

FEMALE: बात केवल अध्यापकों और सरकारों की नहीं है। दुनिया के किसी भी देश के पाठ्यक्रम को उठा कर देख लीजिए। गणित, इंजीनियरी, विज्ञान और चिकित्सा जैसे विषय पाठ्य विषयों की कतार में सबसे ऊपर रहते हैं और नृत्य, संगीत और कला जैसे विषय सबसे नीचे। कलाओं में भी रंगमंच और नृत्य का स्थान चित्रकला और संगीत के बाद रहता है। क्यों? क्योंकि हमारी शिक्षा का ज़ोर बच्चों के पूरे व्यक्तित्व की बजाय उनके दिमाग़ों पर ज़्यादा रहता है। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की सारी ऊर्जा गणित, इंजीनियरी, चिकित्सा और संगीत में विशारद 'सिर' तैयार करने में जाती है, नाचने और भागने वाले 'पैर' तैयार करने पर नहीं। ब्रिटन की एक चोटी की नृत्य निर्देशक को बचपन में एक मनोरोग चिकित्सक के पास ले जाया गया। जिसने लंबी बातचीत के बाद माँ-बाप को समझाया कि उनकी बेटी बीमार नहीं है बल्कि उसमें नाचने की सहज प्रतिभा है इसलिए वह कक्षा में निचली नहीं बैठ सकती। दुनिया के ज़्यादातर आविष्कारक, कलाकार और मौलिक विचारक स्कूली शिक्षा में कमज़ोर रहे हैं लेकिन अपनी रचनाशीलता के बल पर उन्होंने दुनिया बदल दी। यदि हमें बच्चों को कल की चुनौती के लिए तैयार करना है तो उनकी रचनाशीलता को इस शिक्षा प्रणाली से आज़ादी दिलानी होगी।

MALE: यह सही है कि शैक्षिक उपाधियों की कोई उपयोगिता और क़ीमत नहीं बची है। फिर भी, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और प्रबंधकों के बिना काम नहीं चल सकता। स्कूली शिक्षा प्रणाली ने भी बहुत से आविष्कारक, दार्शनिक और कलाकार दिए हैं। लेकिन हाँ, सूचना को जमा कराने की बजाय रचनाशीलता पर ज़ोर देने का समय आ गया है। क्योंकि सूचना जमा करने और उसका गहन विश्लेषण करने का काम तो हमने मशीनों को भी सिखा दिया है। इसलिए अब स्कूलों में बच्चों पर

www.xtrapapers.com

पाठ्यक्रम लादने की बजाए उन्हें उनकी रुचि के कामों में लगाने की ज़रूरत है। ग़लतियों की परवाह किए बिना नए-नए प्रयोग करने और मिल-बैठकर ज्ञान साझा करने से ही नई युक्तियाँ सूझती हैं। हमारे दिमाग़ की ताकत उसकी अरबों कोशिकाओं में नहीं एक-दूसरी के साथ जुड़ने से बने जाल में रहती है। तो, बच्चों को स्कूल भेजना बंद करने की नहीं, बल्कि पाठ्यक्रम में रचनाशीलता पर ज़ोर देने की ज़रूरत है। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4 की इस बहस को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

MALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2022